

भागवत विस्मयनविषयतिवैपुष्पाः॥१२॥टिका॥पहिलेंशास्त्रप्रवर्णज्ञानात
७
७
दानुभवहोयविज्ञानायेसाज्ञानविज्ञानसंपन्न॥निराभिमानता
होय॥२९॥साधन्यनिराभिमानता॥जिआलिहोयेहाता॥तरिश्मं
तितथंसर्वथा॥उल्हासतापेपाव॥दिदुनिनिश्चबहुणों॥कां
दातसाउनिमाहुणों॥तेशां॥कणाम्भण॥आक्रोपुपणोंसा
हादुस॥३॥शांतिमणिपेयसि॥सागरिआशान्नतालेसि॥
चदुवाहदुनारितिसं॥सर्वथा॥३॥नानासहितम्व
र्यबा॥आणुनिधालिसमबमबा॥तोतिबगरिनकेडहका॥
आतिनिर्मळनिबंगो॥तोसिनानाफतविषमता॥स्वार्थवि
रोधंभांगीआदबता॥पालदुनहेड्याव्याचिता॥तेजाणसर्वथा

निजशांतिः॥ यैः सिशांतिष्वसिदेखा॥ तोचिसर्वभूतां वासखा॥ आव
७२ उतासर्वलोक॥ सहृदतोकां सर्वावा॥ नवलसरय्यत्वा निपरि॥ स
र्वस्वदनिजमेत्रि॥ स्वार्थिं वृक्षार्थनकरि॥ सुपायात्रिउपदेश॥ ७६॥
आतक्यतया निपाहातिदिदि॥ मह्येदस्य सकलश्रुति॥ जगत्सिखा
विमानगांदि॥ निजदृष्टिबोधिनि॥ मगतोजेउतापाहे॥ तेउतामिं
चितयाआहे॥ तोजहिमातेनवाहि॥ तेनपाहाणेहिहोयेंमिल्यान्वा॥ ७८॥ ७९
त्यासिपाहातिजदिदि॥ तेमिनि॥ जगजेदि॥ यैसितयामलयकिगां
दि॥ सकलस्थष्टिसमवेता॥ आवधंजगन्निमिंहोये॥ तेथलुहभा
षजाये॥ यैसाममाजितोसामाये॥ समसाम्यसमत्वे॥ ८०॥ सांडनि
यांमनाधर्मा॥ यैसातोमिंजालास्तगम॥ त्यासिकेवपुडतिजने॥ ८१
खडुर्गमिज्याचेनिग॥ मातेचाउदरकुंहरि॥ रजस्यळेव्याधिरीमा

(2A)

नागव

११

रि॥ पितयाचेनिरेतद्वारि॥ गर्भसंवारि संचरणा॥ जे मातेचा उदरि जंत
ना किं तो उडि उरि॥ विद्यामूत्राचे दाथरि॥ नवमासवरि उकडिजे॥ ॥ ॥ ज
उरासि चातो उघालूनि गभानि उडि॥ उकडउकडुपि उि॥ गर्भकां उघडि
जाति॥ ॥ ते गभानि विवेदना॥ कोना ना परि चियात ना॥ न को न को रघुन
दना॥ चिळ समना येतु सो॥ ॥ आवधया ना सेवटि॥ प्रसूति वात जा अ
टि॥ सवंगि वेदना उठि॥ योनि रक्त देह जन्म देहा॥ ॥ ये सपे अपि
वित्र जन्मा॥ ते न पवति चि न रात मा॥ ते हि दा कलें मासें निज धामा॥ पुरु
षोत्तम सम साम्ये॥ ॥ मित्रास तां पाठि पोठि॥ त्यासि का देस्या जन्म ग
ठि॥ कळिकाळा ते नणि दुष्टि॥ जाले उगा उठि मट पाण्ण॥ जेथें तत्तम ना
हि जालें॥ तेथें मरण न लगत चि गेलें॥ ये सत्र जो मातें नि पावले॥ न जन

3
वर्णे म१ दत्त ॥ १४ ॥ कृष्ण उद्भवांते थापति ॥ लणो वेगिं उठि उठि ॥ हेचि हा
तोर्सि हात वटि ॥ ल नम उटि जेणे होयो ॥ १५ ॥ जैसं मेघ मुरि वें उदका वरि
व्यावरि से लिचा केतो ॥ तैसं कृष्ण च च निदेखा उद्भवं म्तरवप सस्ति ॥
॥ ५१ ॥ क म्चंद्र कीराणि च कोस ॥ जे विषा ल्यंत सा दरा ॥ ते वि उद्भवा म्वा आ
दरा ॥ दिसे थोर हरि क वनि ५२ ॥ दोहा ॥ क्षि देखा निपिल ॥ लाणो निचा
रया न्वे वळे ॥ सांडुनियां आवि स ॥ म्तरव को वळे जे विष सारि ५३ ॥ १४
ते वि देखा तिल कृष्ण म्तरवा उद्भवा ॥ अत्यंत स्तरव ॥ श्रवणा न्वे नि म्तर
रवं देखा ॥ कृष्ण पीयूष सेवितु ॥ ५४ ॥ लोका ॥ श्री शुक उवाचा ॥ इत्यादि
ष्टो म्मगवता ॥ माहा म्मगवतो नृपा ॥ वस्तवः प्रणिपत्या हृत्वं जिज्ञास्त
रर्चि ते ॥ १५ ॥ ठिका ॥ शुक म्मणो को रवता था ॥ कृपा उप जलि म्मगवता ॥

उपदेसिले महाभागवता॥ ज्ञानकथानिजबोधु॥ ५५॥ तेऐ कोनिगुड
व॥ श्रवणा चोरु ठिहांव॥ कै सेंबोलिले ज्ञानगौरव॥ अतिअपूर्वश्री
कृष्ण॥ ५६॥ श्रीकृष्णश्रीमुखे सांगे कोड॥ तेनिरोपण अतिगोड॥
जीविंठरिति श्रवणा॥ चाडु॥ नुलघुमिडुदेवाचि॥ ५७॥ आवडिकल
वलेलेचित॥ घालिसाख्यंगदंडवत्त॥ तजोडुनिपुसता॥ प्रेमभक्तुडव
५८॥ श्लोक॥ उडवडवाच॥ योगेश्वरविन्यासयोगात्मान्योगसंभव॥
निश्रेयसायमेप्रोक्तस्यागसंन्याससंन्यास॥ १४॥ ठिका॥ ऐकेंयोगियां
चियायोगपति॥ योग्याचाठेवानुं श्रीपति॥ योगीप्रकठनुंयोगमूर्त्ति॥
योगदुसतिनुजयासिं॥ ५९॥ मजमोक्षासीकारण॥ त्यागसंन्यासल
क्षणा॥ बोलिलेसितो अतिकटिणा॥ परमदारूणाहासागु॥ ६०॥ श्लो
क॥ त्यागोयंदुक्करोनुमकामानांविषयात्मभि॥ सुतरांत्वयिसर्वात्म

नमस्तस्मिन्मिति ॥ १५ ॥ ठिका ॥ पाहतां या त्यागाचि गति ॥ मज दुर्ध
रगा श्रीपति ॥ मग यितरांचिये थगति ॥ कवण्यास्थिति होयिल ॥ ६१ ॥
कामुजयाचांचि ति ॥ विषयिं अशक्त मति ॥ त्यासिया त्यागाचि गति ॥
नहे श्रीपति सर्वथा ॥ ६२ ॥ नुसिल पाजवें न के ॥ तवें तो आभक्तों के वि
करवे ॥ त्यागबोलिला जो देव ॥ तो सर्वासि नहे सर्वथा ॥ ६३ ॥ नुसर्वा
ला असतां हृदयिं ॥ चितप्रवेशे न तां ठायिं ॥ तें आवरिलें आसें वि
षयी ॥ नवल कायि सांगां वें ॥ ६४ ॥ ते प्रयेनि श्रीत ॥ ते दुश्चित्त सर्व
दा ॥ ६५ ॥ त्यागुकां न हे सखा ॥ तपरि सगाह वि के शी ॥ कटिरा १५
त्वजें ह्यां सित्ये गासि ॥ ते नुज पासिं सांगेन ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ सोहं ममाह
मिति मूठ मति विगाढ स्वमायया विरचितात्मनि सानुबंद्ये ॥ त
त्वं न सानि गदितं भवता यथाह संसाधया मिमरावन्ननुशाधिभृत्य ॥ ६७ ॥

५५
ठिका॥ सुश्रिमायाविचित्रकपाधी॥ नारीरिकेलिआत्मबुद्धि॥ आ
हिअमचियशरीरसमाधी॥ एवपरितसीधबाढलि॥ ६७॥ मिमा
झेवाढलेंगाढ॥ त्याहोंमतिजालिमुढ॥ गहाशक्तिलागलिदढ॥
त्यागुअवद्यडयालागि॥ ६८॥ ऐसिहिबुद्धिविवले॥ अप्रयासे
बुद्धाकले॥ तैसिह्याकीडराकी॥ दासगोपालेंतासवे॥ ६९॥
यैकेगाफुरूषोत्तम॥ तिजदारांअपुलियांआह्या॥ सोडविगासं
सारश्रम॥ अत्मयाराश्रीहोह्या॥ ७०॥ कुजसीडुनिहवीकेशि॥
फुसोंजावेआणि कापासि॥ तेनयेमाश्रियामनासि॥ विषविासवी
सिब्यापिले॥ ७१॥ श्लोक॥ सत्यस्यतेस्वदृशाआत्मनोआत्मनोयं
वक्तारमीशविबुधश्चपितानुवसे॥ भवेद्विमोहितधियस्तवमाय

येमेव ह्यदयस्तनुभृतोवबहिरर्थभावा॥११॥ ठिका॥ पुसो जांवे ब्रह्म
यासि॥ तो गुंतला श्रुच्छि कर्मासि॥ प्रजाकृत्यतिमानसि॥ अहिर्नि
शिविंति॥१२॥ जो आपुलानिज स्वभाविं॥ संदासंसारुवाढठ
वि॥ तो के विसंसारुतोड वि॥ कैलें नवु नुड विसर्वथा॥१३॥ वाढों
नेदिसंसारसि॥ कोपु आलापुजा पतिसि॥ शायुदिचलानारदा
सि॥ ब्रह्मरूपदेरी ह्यरोनि॥१४॥ एसे संसारि आसक्त॥ नित्य सं
सारयुक्त॥ त्यासि पुसोन मतिचि॥॥ ज्ञाणनिश्चित श्रीकृष्णा॥ १६
॥१५॥ पुसों जांवे ऋषिप्रति॥ तवतसदा आयमति॥ आपुलें मत्त
प्रतिस्थिति॥ अन्यथादेति शापाते॥१६॥ निर्विंधरुनि अर्थाशक्ति॥
शिष्यांतेरुपदेशिति॥ विषयो धरुनियोचिति॥ जीविकावृत्तिरुप
देशु॥१७॥ गुरुसिचिविषयाशक्ति॥ तेथ शिष्यासि कैचिविरक्ति॥

५५
कुंजरकरवेष्टि सा चार ॥ पालागि अ
नंत अपार पार ॥

हसियां ते जे पु सति ॥ ते भंशति स्वार्थ ते ॥ ७८ ॥ सत्य स्वरूप स्व प्रकाश ॥ आत्मा
कुं अविनाश ॥ युक्ति प्रत्युक्ति उपदेश ॥ विकल्प निराश ज्ञाण सि ॥ ७९ ॥ ब्रह्म
ज्ञानाचा वक्ता ॥ कुंज वेगला कल्पना था ॥ नदि से गा सर्व था ॥ मज पाहतो त्रै
लोकि ॥ ८० ॥ यव आत्मा कुं तत्वता ॥ आत्म ज्ञानाचा दाता ॥ अत्म बोधि संस्था
पिता ॥ कल्पना था कुं ये क ॥ ८१ ॥ श्लोक ॥ तस्माद्भवंतु मनवें द्यमनंत पारं सर्व
समीश्वर मकुंठ विकुंठं चिह्नम् ॥ निर्वराधीरह मुहव जिना भित्तो ना
रायणो नर सरं वशारणं प्रयद्य ॥ ८२ ॥ टीका ॥ या ला गि जि या दव पति ॥ पं
वित्रै रंबो तियो लां गि ॥ नित्य शुद्ध पवित्र मूर्ति ॥ कुंज माया मोहना तलति ॥
पवित्र ख्याति या ला गी ॥ ८३ ॥ जो आ कले गुरा आंत ॥ त्या सिते गुरा करि ति
प्रांत ॥ त्या गुरा सि कुंज मा जि अंत ॥ या ला गी अनंत कुं सर्व था ॥ ८४ ॥ देता
ता काल ता पर ॥ श्रुति सि पार न कले चि ॥ ८५ ॥ कुंज म्यां करा विविन ति ॥

6
किंति यावें काकुलति ॥ तुह्दये स्थ ज्ञानमूर्ति ॥ ज्ञाण त्रिजगति तुं ये कु ॥ ८५ ॥ ज्ञा
न अज्ञान माया शक्ति ॥ इश्वरा आधि नगा आसति ॥ त्या इश्वरा चितुं इश्वर मूर्ति
सत्य कीर्ति श्री कृष्ण ॥ ८६ ॥ तुं सर्वो चानियंता ॥ सर्व करुनि आकर्ता ॥ ऐसा इश्वर
तुं कृष्ण नाथा ॥ भोगुनि अभोगें ता तुं ये कु ॥ ८७ ॥ देश ता काल ता स्वभावं सिं ॥
नाशुन पवें ज्या स्थानासि ॥ तेथि वा तुं निवास वासि ॥ पूर्ण पूर्ण शिं आवतारु
॥ ८८ ॥ नराचें आविनाश स्थान ॥ याला गितुं नारायेरा ॥ तुझे निजि वासि चलण
चाल करण तुज पासि ॥ ऐसा इश्वर तुं आप पा ॥ नर सखा नारायेरा ॥ युद्ध सम १७
यिं अर्जुनासि जारा ॥ ब्रह्म ज्ञान त्वों धुधले ॥ ९० ॥ दारुणा होतां संग्रामासि ॥ पा
हुडां पावो युधासि ॥ तेकां ब्रह्म ज्ञान सींगसि ॥ तिज सखयासि अर्जुना ॥ ९१ ॥
ऐसा कृपालु नारायेरा ॥ याला गितुं जालों शररा ॥ त्रिविद्ध तापें तापलो जा
रा ॥ दुख दारुण संसार ॥ ९२ ॥ संसार ह्मणि अंधः कुपें ॥ माजि काम क्रोधा

दिदुस्तरसर्व॥ निदास्यर्धाकांटे आमृप॥ दुखरूपिं पडिये लो॥ १३॥ तेथ यडिलिया
 हि पाटि॥ ब्रह्मद्वेषाचा शूलपोटि॥ भरला जिठटाटि॥ तेरो हि पुटि होतु सें॥ १४॥
 श्लोक॥ श्रीभगवानुवाच॥ प्रायण मनुजालोके लोकतत्त्वविचक्षणा॥ समुद्र
 रंतित्यात्मानं मात्मानैवाशुभाशयात्॥ १५॥ टिका॥ भूतसंचरत्या पाटि॥ सुद
 तिजपेंत्यवादगोटि॥ त्यातें गुरि पाप हो निदिटि॥ अक्षतात्रा हाटि मंत्रुनि॥ १५॥
 क पाहातां पांचभूतिसंसार॥ सहजें जलका सें योरु॥ माजि सोंबिला कृष्णविये
 गरवे चरु॥ उड्डलें करु सडपलें॥ १६॥ टिका॥ उड्डवाचि सुडपणि॥ अहं हौ सासुर
 लागला जनि॥ त्यासि करावया साडि॥ हस्तगुरिचा लिला॥ १६॥ तें ये साडि
 लांगि आतां॥ येदु आवकत संवादकथा॥ त्याचि मंत्रुनि मंत्राक्षता॥ हो ये साडि
 ता श्रीकृष्ण॥ १७॥ श्रीकृष्ण हारो ध्ये लोकासि॥ आप आपणासि उड्डरिति॥
 ॥२००॥ नृमुक्षमार्गिचे सजान॥ लोकतत्त्वविचक्षणा॥ विचारुनि कार्याकारणा॥

उड्डवासि॥ सावक होयिनि जमानसि॥
 पडनिया मनु॥

स्वकुडि जाण उद्धरले ॥१॥ नित्या नित्यविवेके ॥ अनिसांडितित्यागमुखे ॥ नित्य
तेयथासुखे ॥ हितसतोषे अंगिकारिति ॥२॥ नित्यत्वे जे उद्धरले जाणा ॥ ते स्वरूपमा
झे चिह्न ॥ तेच साड्ढको चेसाड्ढन ॥ अनचिते होति जाणा ॥ न्यपराचिंतिति ॥
॥३॥ भावितं मासि दृढभावना ॥ मिचिते होति जाणा ॥ किटकिटगियाखुरणा
॥ आपआपण्या उद्धरिति ॥४॥ श्लोक ॥ आत्मनो गुरुरात्मैव पुरुषस्य चिश्चैव
त ॥ यत्प्रत्यक्षानुमानान्यो श्रेयो सावकं वैदते ॥२०॥ टिका पश्चादियोनि
चांठांडं ॥ हिताहिता ज्ञान असेपांति ॥ पुरुषाचा पुरुषदेहि ॥ ज्ञानपांति १८
स्फुरदप ॥ साडुनि अश्रुभवासना ॥ जोन करि विषयिंकल्याणा ॥ तो आप
लागुरू आपुण जाणा ॥ नरकयातना दुकविला ॥६॥ जे को टालाला जन्मा
सि ॥ सवीवैकवैसम्ये ऐसे जासि ॥ तेच आपुलागुरू आपणासि ॥ विवेको
सि जासावा ॥ रोनि उबगलामरणासि ॥ आधिलागलि मानसि ॥ जन्ममर

७४
रासिनाशावया ॥७॥ आवहितुपजेह्यपुचंरुसि ॥ निदानलगेआहिर्निर्नि
॥ कालेंग्रासित्ते आयुषासि ॥ निजहितासिनेदरिवजे ॥ ८ ॥ क्षणक्षणाका
लुजातुसेव्यर्थ ॥ कांहीनसाधेदिपरमार्थ ॥ जन्ममरणाचा आवर्तु ॥ पु
ढांआनर्थरोकडा ॥ ९ ॥ नरदेह मोक्षचावांटा ॥ वृथाजातुसेकटाकटा ॥
हृदयीआधीलामोटा ॥ विषयेनेसाधिसरला ॥ १० ॥ प्रतक्षलणोअनित्य
॥ संसारदिनाशिवंत ॥ पालागितुहेतोअशक्त ॥ होयेविरक्तयिहभो
गी ॥ ११ ॥ याचिपरिअनुमाना ॥ परलोकेभोगभावना ॥ आतलोंनेदि
मना ॥ नश्वरपतनाजाणोनि ॥ १२ ॥ कैंकपाकरिलगोविंदु ॥ कैंहातुटे
लभवबध ॥ कैंदेखेननिजबोध ॥ परमानेदुजेसोंहोये ॥ १३ ॥ धावंपा
वगाश्रीहरि ॥ मजठुद्धरिंभवसागरिं ॥ कृपाकरिंदिनावरि ॥ भक्त

कैवारि श्रीकृष्ण ॥ १४ ॥ जै सिजला वेगलि मा सोलि ॥ तै सा बोधा लागि
तल मलि ॥ ये म पडि नाराचो मेलि ॥ देहना सो भालि सर्वथा ॥ १५ ॥ जहि
विवेक कल लामना ॥ तहि न तुटति विषये वासना ॥ ते एों संत प्रहो नि
जारा ॥ नाराये राचिं तिल ॥ १६ ॥ कृष्ण रोडु दवा सि ॥ स विवेक वे
राये ऐं से ज्या सि ॥ तो चि आपु का मरु आपरा सि ॥ विषे शों सिं जारा व
॥ १७ ॥ त्या चिये निज बुद्धि सि ॥ पानि विवेक प्रकाशि ॥ तो स्वये जारो
जारो निज बोधा सि ॥ निज मान सि विवेक ॥ १८ ॥ ज्या सि जै सा भावो त्या १९
सि भितै सा देवों ॥ ये अर्थि संदेहों ॥ उद्धवा पाहो न धरावा ॥ १९ ॥ उद्ध
वा ये थके वल ॥ पाहि जे निज बुद्धि प्रबल ॥ तरि आत्म बोधक तत्काल ॥
होये सकल सर्वथा ॥ २० ॥ श्लोक ॥ पुरुष त्वे च मां धिरोः सारथो योगवि

४५
शरदा॥ अविस्तरं प्रयत्नंति सर्वसत्त्वमवहितं॥२१॥ एवं वै शरपेयं
र्त्तमरितं॥ धीरपुरुषविवेकयुक्तं॥ सांख्ययोगविवेचितं॥ निजोनी
जप्रसूतकाले॥२१॥ नरदेहिविवेकवसे॥ निजरूपपावले कैसे॥ जे
सर्वशक्तियुक्त असे॥ ते सावका सदेखति॥२२॥ जे प्रसर्वशक्तितें॥ सर्व
जे सर्वशक्तिशक्तिदाते॥ जे नाले सर्वशक्तितें॥ त्या स्वरूपातें पाहा
ताति॥२३॥ उद्धवाकाये सांगो गीटि॥ बहुते शरिरे सजिलि श्रुष्टि॥
मजनरदेहि आवडि मोटि॥ उवाउदी मिहोति॥२४॥ श्लोक॥ ऐकहि
त्रिचतुःपादा बहुपादास्तथापदः॥ बद्ध संति पुरः स्वशानासां मेधूरुष
प्रिया॥२५॥ टिका॥ केलियक चरणि नारीरे॥ दोपायां चिं आपारे॥ ति
पायां चिं मनोहरें॥ अति सुदरें चतुष्पादे॥२५॥ सर्पादियो निचाशें

७
धि॥केलिंपाहिंससीसे॥आचरणचिकेलेनाहि॥येकेंचालिल्लिंबद्रुपां
यी॥केलिंपाहिंशरीरें॥२६॥ऐसिंशरीरेंनेरणेकिति॥म्यानिर्माणके
लिंपेक्षीती॥मज्जकल्यातेंनेराति॥मूढमतियालागि॥२७॥मज्जकल्या
चिप्राप्ति॥होवयालागिनिश्चिति॥स्वासेंपवेसोनिज्ञानशक्ति॥
पुरुषप्रकृतिम्याकेलिं॥२८॥जेहोंदेहेमज्जपावति॥त्यादेहाचिम
जप्रिति॥यालागीश्रुतिनरदेहाप्रिति॥देवयोद्धितिनरदेहा
२९॥ऐसिनरदेहिचिप्रिति॥होवयालागिनिश्चिति॥येणेंशरीरें २०
मज्जपावति॥नानायुक्तिविचारें॥२३०॥श्लोक॥अत्रमांमार्गंयं
त्यद्वायुकाहेकुमिरिश्वरं॥नृहोमासोर्गुलैलिंसे॥रयाह्यमचुमा
नतः॥२३॥टिका॥येमुनिनरदेहाप्रिति॥मज्जकल्याचिगवेनाणाक



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com